IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
IJARSCT
Impact Factor: 6.252
Volume 2, Issue 1, October 2022

प्राचीन हिंदी काव्य साहित्य से प्रकृति का संबंध

डॉ. सनकादिक लाल मिश्र[1] and अजीत कुमार मिश्र[2]
प्राध्यापक, हिंदी[1] and शोध छात्र, हिंदी विभाग[2]
शा. शहीद केदारनाथ महाविद्यालय , मऊगंज, रीवा (म.प्र.)
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय , रीवा, (म.प्र.)

शोध संक्षेप– प्राचीन हिंदी काव्य साहित्य का प्रकृति से बहुत गहरा संबंध है। स भवतः इस सृष्टि पर जब प्रथम काव्य रचना ने जन्म लिया होगा, जब प्रकृति सौंदर्य के चरम पर रही होगी। कोमल हृदय व्यक्ति का भाव जब प्रकृति मय हो जाता है, तब जाकर एक सुंदर कार्य रचना होती है। प्राचीन हिंदी काव्य साहित्य के कण–कण में प्रकृति सौंदर्य और उसका महत्व समाया हुआ है। अति प्राचीन काल के वेद, पुराण, महाकाव्यों में प्रकृति और मनुष्य का अटूट संबंध वर्णित किया गया है। रामचरित मानस, श्रीमद् भागवत गीता जैसी कालजयी रचनाओं में प्रकृति के महत्व को समझाया गया है। इन्हीं महाकाव्यत्मक कथानकों को आधार मानकर आदिकाल से लेकर आधुनिक काल की रचनाओं में साहित्यकारों ने मानव जनजीवन और प्रकृति का प्रेममयी संबंध उद्धृत किया है।

संदर्भ सूची:

हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ नगेंद्र, पृष्ठ ब्ब

वहीं, पृष्ठ ≅ख

श्रीरामचरित मानस, बालकाण्ड, तुलसीदास, पृष्ठ सं या क्ष्फ, (मझला साइज), गीता प्रेस गोरखपुर,

वहीं, अरण्य काण्ड, पृष्ठ सं या प–भ